|| हिंदी भाषा का विश्वस्तरीय ऑनलाइन ज्योतिष पोर्टल ||

विश्व प्रसिद्ध एस्ट्रोलॉजर द्वारा प्रदत्त **ज्योतिष** परामर्श

Website : https://JyotishShastra.com
Email : care@jyotishshastra.com
Horoscope Web Link : https://JyotishShastra.com/horoscope

हॉरोस्कोप फॉर्म विवरण :-

NAME :	Digvijay Pawar	GENDER :	Male
DATE OF BIRTH :	06 / 09 / 1986	TIME OF BIRTH :	08:30:00 AM
CITY :	Vita, Sangli	STATE :	Maharashtra
COUNTRY :	India	LANGUAGE :	Hindi
PROCEDURE :	Vedic Parashar	SERVICE NAME :	Gemstone Suggestion
QUESTION(S) :	पुत्र प्राप्ति के योग कब हैं और उसके लिए कौनसा स्टोन धारण करना चाहिए?		
Mobile No. : 8600382616		Email ID : digvijaysinhpawar@gmail.com	
ORDER ID : #1049	PAYMENT ID : 221579790	AMOUNT : ₹299	
Order Date : 15/12/2018		Delivery Date : 19/12/2018	

लग्न, राशि एवं ईष्ट :-

लग्न :	कन्या
राशि :	कन्या
ईष्ट देव :	हनुमानजी

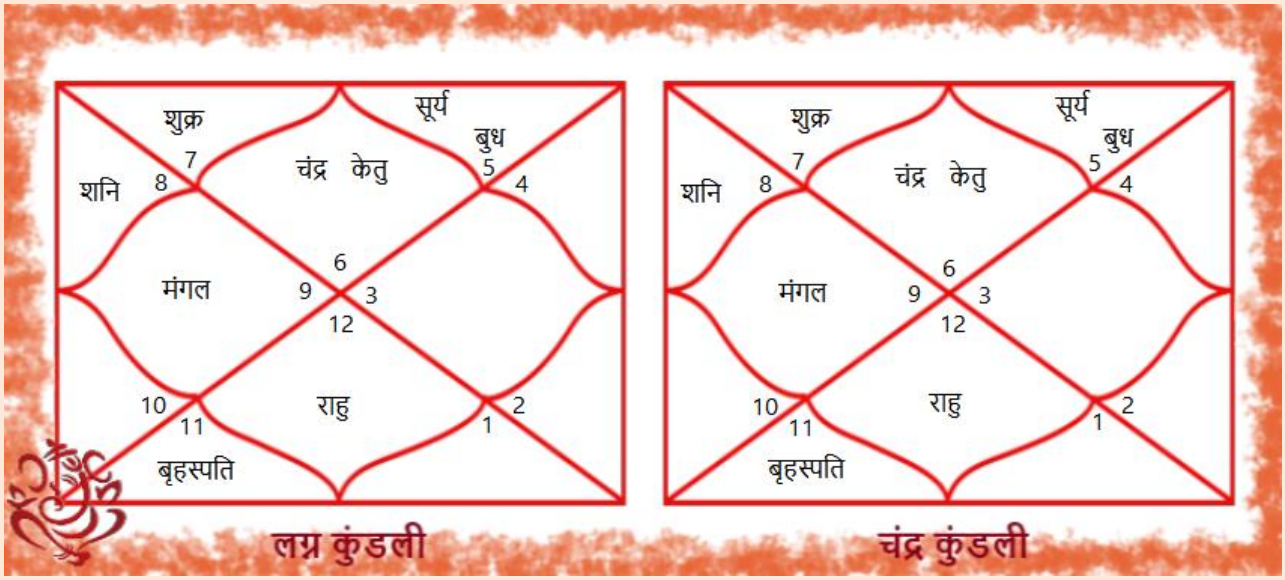

ॐ श्री गणेशाय नमः

कुंडली फलादेश :

श्रीमान दिग्विजय जी आपकी लग्न कुंडली में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में है जिसके अनुसार आप ठेठ मंगली हैं | यदि आपकी पत्नी भी मंगली हैं तो आपकी कुंडली अनुसार पुत्र संतान प्राप्ति के योग 2019 से 2020 के बीच बनते हैं | किन्तु यदि आपकी पत्नी मंगली नहीं हैं तो पुत्र संतान प्राप्ति की संभावनाएं आपकी कुंडली अनुसार क्षीण हैं | ऐसा आपकी पत्नी का लगातार खराब स्वास्थय रहने के कारण होगा एवं पत्नी के खराब स्वास्थ्य का कारण आपके मंगल का प्रबल होना है | यदि आपकी पत्नी आपकी ही तरह ठेठ मंगली नहीं है व साधारण मंगली अथवा आंशिक मंगली हैं तो भी आपके मंगल की तीव्रता उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करेगी |

जनवरी 2020 तक आपकी राहु की महादशा है | जनवरी 2020 से ही बृहस्पति की महादशा का आरम्भ होगा, आने वाला यह समय सुखमय रहेगा |

यदि पत्नी मंगली नहीं हैं तो जनवरी 2020 के पश्चात पत्नी के स्वास्थ्य का आंकलन करते हुए ही संतान प्राप्ति हेतु प्रयास करें | यदि आपकी पत्नी भी मंगली हैं तो 2019 से आप संतान की प्राप्ति के लिए प्रयास करना प्रारम्भ कर सकते हैं | इस योगकारक समय का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए एवं योग को प्रबलता प्रदान कर अधिक प्रभावी करने के लिए निम्न दिए जा रहे उपाय अवश्य ही करें :-

विशेष उपाय :-

♦ केसरिया गणपति की घर में स्थापना करें व उनकी प्रतिदिन पूजा अर्चना करें | मूर्ति का आकार आपकी हथेली से बड़ा न हो |

♦ हनुमान चालीसा का पाठ नित्य प्रतिदिन करें |

♦ माह में एक बार शुक्ल पक्ष के किसी एक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं व उनके सम्मुख बैठकर हाथ जोड़कर उनसे पुत्र संतान प्रदान करने के लिए प्रार्थना करते हुए उनके सम्मुख अपनी मनोकामना रखें |

♦ पति - पत्नी दोनों मिलकर प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के समय आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें व तत्पश्चात उगते सूर्य को अर्घ दें | यदि पुत्र संतान चाहिए तो गर्भ धारण से सात से आठ माह पूर्व से यह करना प्रारम्भ कर दें व गर्भधारण के पश्चात संतान के पैदा होने तक निरंतर करते रहे |

♦ माह में एक बार शुक्ल पक्ष के किसी बुधवार को हिजड़ों को हरे रंग की वस्तुएं भेंट करें जैसे हरे रंग की साडी, हरे रंग का कम्बल, हरे रंग के कपडे, हरी सब्जी इत्यादि |

♦ पति - पत्नी दोनों ही सौंफ - मिश्री अथवा मीठा पान अथवा दोनों खाने की आदत डालें |

♦ गाय व बंदरों को गुड़ - चने खिलाते रहे |

रत्न निर्धारण :-

आपके प्रश्न अनुसार आपकी पुत्र प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण करने के लिए आपको तीन रत्न- पन्ना, हीरा एवं नीलम धारण करने का परामर्श किया जाता है |

पन्ना रत्न :-

पन्ना रत्न धारण विधि :

बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न पन्ना अथवा एमराल्ड को धारण करने के लिए सर्वप्रथम प्रश्न उपजता है कि कितने भार अथवा रत्ती का पन्ना धारण किया जाना उपयुक्त रहेगा ? इसके लिए सर्वप्रथम अपना वजन ज्ञात कर लें | अपने वजन के दसवें भाग के भार बराबर रत्ती का शुद्ध एवं ओरिजिनल पन्ना स्वर्ण अथवा चाँदी की अंगूठी में जड़वाएं | मान लीजिये आपका वजन 70 किलो ग्राम है तब आपको सवा सात रत्ती का पन्ना रत्न धारण करना उपयुक्त रहेगा | किसी भी शुक्ल पक्ष के बुधवार को सूर्य उदय होने के पश्चात् इसकी प्राण प्रतिष्ठा करें | अंगूठी के शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करने हेतु सबसे पहले अंगूठी को पंचामृत अर्थात दूध, गंगाजल, शहद, घी और शक्कर के घोल में डाल दें, फिर पांच अगरबत्ती बुध देव के नाम जलाए और प्रार्थना करे कि हे बुध देव मै आपका आशीर्वाद (अथवा जो भी मनोकामना हो बोलें) प्राप्त करने हेतु आपका प्रतिनिधि रत्न पन्ना धारण कर रहा हूँ कृपया करके मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करे | तत्पश्चात अंगूठी को पंचामृत से निकालकर 108 बारी अगरबत्ती के ऊपर से घुमाते हुए "ऊँ बुं बुधाय नमः" मंत्र का जाप करे तत्पश्चात अंगूठी को विष्णु जी के चरणों से स्पर्श कराकर कनिष्ठ अंगुली में धारण करें | पन्ना धारण करने के 30 दिनों में प्रभाव देना आरम्भ कर देता है | निरंतर लाभ प्राप्ति हेतु, प्रत्येक तीन वर्षों के अंतराल के पश्चात इसका उक्त विधि द्वारा शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करते रहें |

हीरा रत्न :-

हीरा रत्न धारण विधि :

हीरा शुक्र गृह का प्रतिनिधि रत्न है | हीरे को चाँदी अथवा प्लैटिनम की अंगूठी में जड़वाकर शुक्ल पक्ष के शुक्रवार के दिन, सूर्य उदय होने के पश्चात् इसकी प्राण प्रतिष्ठा करें | अंगूठी के शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करने हेतु सबसे पहले अंगूठी को पंचामृत अर्थात दूध, गंगाजल, शहद, घी और शक्कर के घोल में डाल दें, फिर पांच अगरबत्ती शुक्रदेव के नाम जलाये और प्रार्थना करे कि हे शुक्र देव मै आपका आशीर्वाद (अथवा जो भी मनोकामना हो बोलें) प्राप्त करने के लिए आपका प्रतिनिधि रत्न, हीरा धारण कर रहा हूँ, कृपया करके मुझे आशीर्वाद प्रदान करे | तत्पश्चात अंगूठी को पंचामृत से निकाल कर "ॐ शं शुक्राय नमः" मंत्र के 108 जप करते हुए अंगूठी को अगरबत्ती के उप्पर से 108 बार घुमाए व अंगूठी को लक्ष्मीजी के चरणों से लगाकर अनामिका ऊँगली में धारण करें | हीरा अपना प्रभाव 25 दिन में देना आरम्भ कर देता है | हीरा अत्यंत महंगा रत्न है अतः हम इसके साइज का उल्लेख नहीं कर रहे हैं | जातक स्वमं अपनी सामर्थ्य अनुसार चुनाव करते हुए खरीदें | किन्तु ध्यान रहे हीरा उत्तम क्वालिटी का होना चाहिए | हीरे की परख 4 C- (कलर, कट, क्लियरिटी व कैरेट) के आधार पर होती है | अतः उच्च क्वालिटी का लैब द्वारा सर्टिफाइड हीरा, किसी विश्वसनीय जौहरी अथवा रत्न केंद्र से ही खरीदें |

नीलम रत्न :-

नीलम रत्न धारण विधि :

शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न नीलम अथवा ब्लू सफायर को धारण करने के लिए सर्वप्रथम प्रश्न उपजता है कि कितने भार अथवा रत्ती का नीलम रत्न धारण किया जाना उपयुक्त रहेगा ? | इसके लिए सर्वप्रथम अपना वजन ज्ञात कर लें | अपने वजन के दसवें भाग के भार बराबर रत्ती का शुद्ध एवं ओरिजिनल नीलम चांदी की अंगूठी में जड़वाएं | मान लीजिये आपका वजन 70 किलो ग्राम है तब आपको सवा सात रत्ती का नीलम रत्न धारण करना उपयुक्त रहेगा | किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार को सूर्य उदय के पश्चात अंगूठी की प्राण प्रतिष्ठा करें | इसके लिए अंगूठी को सबसे पहले पंचामृत अर्थात गंगा जल, दूध, घी, केसर एवं शहद के घोल में 15 से 20 मिनट तक डाल के रखें, तत्पश्चात स्नान के पश्चात किसी भी मंदिर में शनि देव के नाम 5 अगरबत्ती जलाये, अब अंगूठी को घोल से निकाल कर गंगा जल से धो ले, अंगूठी को धोने के पश्चात उसे 11 बारी "ॐ शं शानिश्चार्ये नमः" मन्त्र का जाप करते हुए अगरबत्ती के उपर से घुमाये, तत्पश्चात अंगूठी को शिव के चरणों में रख दे एवं प्रार्थना करे कि "हे शनि देव में आपका आशीर्वाद (अथवा जो भी मनोकामना हो बोलें) प्राप्त करने के लिए आपका प्रतिनिधि रत्न धारण कर रहा हूँ कृपा कर मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करे" तत्पश्चात अंगूठी को शिव जी के चरणों से स्पर्श कराएं व मध्यमा ऊँगली में धारण कर लें |

ज्योतिषशास्त्र, ज्योतिष में भाग्य से अधिक कर्म को प्रधान मानता हैं एवं हमारे द्वारा प्रदत्त कुंडली विश्लेषण पूर्णतया वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं | जो कुंडली में लिखा हैं वह भाग्य हैं, जो बीत गया उसे ठीक तो नहीं किया जा सकता किन्तु अच्छे कर्मो के माध्यम से हम अपने आने वाले समय को सुखमय व सरल अवश्य ही बना सकते हैं | ज्योतिष अन्धकार से भरे मार्ग पर एक पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करता हैं |

यह भी सत्य है कि ज्योतिष किसी जातक को उसकी सीमा से परे तो नहीं ले जा सकता परन्तु हाँ उस जातक की सीमा के भीतर आ रहे अवरोधों व बाधाओं को दूर करने का मार्ग अवश्य प्रशस्त करता है |

उपायों के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने अथवा असुविधा होने पर ईमेल आईडी care@jyotishshastra.com पर हमें ईमेल करें |

नोट :- साकारात्मक भावना व श्रद्धा से उक्त दिए गए उपायों को करें | उपाय बोझिल मन से कतई न करें |

भगवान श्री गणेश आप एवं आपके परिवार के सदस्यों को सुख, शान्ति, स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्रदान करे |

गुरुदेव संदीप पुलस्त्य

ज्योतिष एवं वास्तु आचार्य

— — — — — — — — — — — —